भारत और शंघाई सहयोग संगठन: साझी संपन्नता हेतु बढ़ता सहयोग

डॉ. अतहर जफर *

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की राष्ट्राध्यक्ष परिषद, जो इस संगठन की सर्वोच्च निर्णयकर्ता निकाय है, का चौदहवां शिखर सम्मेलन 11-12 सितंबर, 2014 को ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे में हुआ। विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने इस शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया और यूरेशियाई संगठन में भारत की बृहत्तर भागीदारी की उम्मीद जताई।

शंघाई पांच, जो 1996 में बना था, के पुनर्गठन से शंघाई सहयोग संगठन वर्ष 2001 में बनाया गया। रूस, चीन और चार मध्य एशियाई गणराज्य कज़ाकिस्तान, किर्गिज़ रिपब्लिक, ताजिकिस्तान और उज़्बेकिस्तान, शंघाई सहयोग संगठन के छह सदस्य देश हैं। अफगानिस्तान, भारत, ईरान, मंगोलिया तथा पाकिस्तान इसके पांच पर्यवेक्षक सदस्य हैं और बेलारूस, तुर्की तथा श्रीलंका इस संगठन के तीन वार्ता भागीदार हैं। जहां शंघाई सहयोग संगठन के प्रत्येक सदस्य देश की सीमा कम से कम दो अन्य सदस्य देशों के साथ साझी है, वहीं इसके छह देश मिलकर विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग एक चौथाई अर्थात 1.5 बिलियन है। शंघाई सहयोग संगठन का लगभग 30 मिलियन वर्ग किलोमीटर क्षेत्र यूरेशिया में है और इसका कुल सकल घरेलू उत्पाद 10 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक है।

विगत वर्षों में इस क्षेत्र की सुरक्षा तथा स्थिरता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए शंघाई सहयोग संगठन क्षेत्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभरा है। भारत वर्ष 2005 से ही इस समूह का पर्यवेक्षक सदस्य रहा है और नई दिल्ली ने बहुपक्षीय संपर्कों को और ऊंचे स्तर तक ले जाने तथा साझे पड़ोस में शान्ति एवं संपन्नता में योगदान करने हेतु शंघाई सहयोग संगठन का पूर्ण सदस्य बनने की अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से जताई है। शंघाई सहयोग संगठन के सभी सदस्य देशों के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंध हैं और नई दिल्ली इस समूह के अनेक सदस्यों का रणनीतिक/सामरिक भागीदार है।

शंघाई सहयोग संगठन के साथ भारत का उच्चतर संपर्क *कनेक्ट मध्य एशिया नीति (2012)* के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य मध्य एशिया में विस्तारित पड़ोसी देशों तक पहुंचने का है। इस भागीदारी से आतंकवादी हिंसा, साइबर सुरक्षा, नशीले पदार्थों की तस्करी और अफगानिस्तान से अमरीका (की सेना) की वापसी के बाद वहां की स्थिति सहित शंघाई सहयोग संगठन के देशों की समस्याओं के समाधान में सहायता मिलेगी।

अफगानिस्तान लंबे समय से हिंसा और अस्थिरता की चपेट में रहा है और आशंका है कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा सहायता बल (आईएसएएफ) की वापसी के साथ ही स्थिति खराब हो सकती है। राष्ट्रपति पद की (चुनाव) प्रक्रिया की समाप्ति के पश्चात राजनीतिक बदलाव की प्रक्रिया पूरी होनी अभी बाकी है और अफगानिस्तान तथा अमरीका के बीच द्विपक्षीय सुरक्षा करार (बीएसए) अभी तक अनुमोदित भी नहीं हुआ है। शंघाई सहयोग संगठन के तीन देशों - उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान और चीन की सीमाएं अफगानिस्तान से मिली हुई हैं और भारत सहित इन देशों ने वहां (अफगानिस्तान में) शांति तथा स्थिरता लाने हेतु क्षेत्रीय पहल प्रारंभ की है। "अफगान-नेतृत्व और अफगान-स्वामित्व वाली सुलह एवं पुनर्निर्माण प्रक्रिया" के प्रति शंघाई सहयोग संगठन का रूख अफगानिस्तान पर भारत के रूख से मेल खाता है। भारत ने अफगानिस्तान के लिए 2 बिलियन अमरीकी डॉलर का वायदा किया है। इसी प्रकार, चीन तथा शंघाई सहयोग संगठन के अन्य सदस्य देश अफगान अर्थव्यवस्था के विकास में रूचि लेते हैं और वे अन्य क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं के साथ इसके एकीकरण/समेकन के लिए निवेश करते रहे हैं।

शंघाई सहयोग संगठन के सभी सदस्य देश और भारत आतंकवाद तथा अलगाववाद से उत्पन्न हिंसा से प्रभावित रहे हैं। ताजिकिस्तान और उज़्बेकिस्तान धार्मिक अतिवाद और आतंकवाद में बढ़ोत्तरी से चिंतित हैं क्योंकि वर्ष 2012 में जातीय हिंसा में अनेक किर्गिज़ लोग मारे गए थे। दूसरी ओर रूस और चीन चेचेन्या तथा झिंजियांग में अलगाववाद से उत्पन्न हिंसा का सामना कर रहे हैं। भारत आतंकवाद के खतरे से लंबे समय से जूझता रहा है और इस क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग (कायम करना) खतरे को कम करने में सहायक हो सकता है। शंघाई सहयोग संगठन का क्षेत्रीय आतंक-विरोधी ढ़ांचा (आरएटीएस) इस क्षेत्र में साझी समस्या से निपटने के लिए आसूचना तथा अनुभव साझा करने हेतु मंच प्रदान करता है।

शंघाई सहयोग संगठन में भारत को शामिल करने से 'एशियाई सदी' की अपेक्षाओं को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। शंघाई सहयोग संगठन में 1.5 बिलियन लोगों का एक बड़ा बाजार है और केवल भारत को शामिल किए जाने से ही जनसंख्या तथा भौगोलिक क्षेत्र के मामले में यह सबसे बड़ा क्षेत्रीय आर्थिक ब्लॉक बन जाएगा। शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य विश्व के सबसे बड़े ऊर्जा संसाधन उत्पादक देशों में से एक हैं। रूस तथा कज़ाकिस्तान के साथ-साथ उज़्बेकिस्तान भी बड़ा तेल एवं गैस उत्पादक

देश है, जबकि चीन विश्व का दूसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है। दूसरी ओर, भारत भी मुख्य रूप से कच्चे तेल का आयात करके अपनी ऊर्जा मांगों को पूरा कर रहा है। शंघाई सहयोग संगठन एक ऊर्जा ब्लॉक के रूप में उभर रहा है और बड़े तथा विकसित होते भारतीय तथा चीनी बाजार ऊर्जा उत्पादक शंघाई सहयोग संगठन सदस्यों के लिए बने बनाए बाजार हैं।

यूक्रेन के घटनाक्रम और भाषाई तथा जातीय आधारों पर रूस द्वारा क्रीमिया के विलय को मध्य एशियाई जनता और नेताओं द्वारा आशंका की दृष्टि से देखा गया। दूसरी ओर, मध्य एशिया में चीन के बढ़ते दबदबे और पड़ोसियों पर इसके कथित दावे/जोर-आजमाइश क्षेत्रीय कुलीन वर्ग के साथ साथ सामान्य जनता के बीच बेचैनी पैदा कर रहे हैं। मध्य एशियाई देश इस समूह का (तथाकथित) नेतृत्व करने वाली दो बड़ी ताकतों के इरादों के बारे में दुविधा में प्रतीत होते हैं। शंघाई सहयोग संगठन में अन्य देशों के प्रवेश, विशेषकर भारत जैसी बड़ी अर्थव्यवस्था के प्रवेश का मध्य एशियाई देशों द्वारा स्वागत किया जाएगा जो शंघाई सहयोग संगठन के संतुलनकर्ता के रूप में नई दिल्ली को देख सकते हैं और वे रूस-चीन प्रतियोगिता का साया इस संगठन पर नहीं पड़ने देंगे।

बदलते क्षेत्रीय आयाम में शंघाई सहयोग संगठन का विस्तार न केवल उचित बल्कि आवश्यक भी जान पड़ता है। इस संगठन का पहला और एकमात्र विस्तार वर्ष 2001 में हुआ था जब उज़्बेकिस्तान को इस समूह में शामिल किया गया था और इसका नाम शंघाई पांच से बदलकर शंघाई सहयोग संगठन कर दिया गया था। इस परिप्रेक्ष्य में दुशांबे शिखर सम्मेलन महत्वपूर्ण है क्योंकि नए सदस्यों को शामिल करने के नियम परिभाषित किए जाएंगे और रूस की अध्यक्षता के दौरान शायद नए सदस्य इस समूह में शामिल किए जाएंगे। दक्षिण एशिया में शंघाई सहयोग संगठन को सहारा मिलने से इस समूह में स्थिरता का एक नया आयाम जुड़ेगा और इसे बहुप्रतीक्षित सक्रियता/गतिशीलता प्रदान करेगा।

* *डॉ अतरह जफर विश्व मामले की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।*